व्याख्यान-2

स्नातक तृतीय खण्ड

मैथिली कथा साहित्यक विकास

मैथिली कथा साहित्यक विकास क्रमकेँ विभिन्न विद्वान लोकनि अपन इतिहास आदि पोथीमे स्पष्ट कएने छथि। कथा साहित्यक विकासकेँ समग्र अध्ययनक लेल एकर सम्यक अध्ययन आवश्यक अछि। सभसँ पहिने प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. दुर्गानाथ झा श्रीशक विचार देखू —

आधुनिक गल्प साहित्य क इतिहासकेँ विकासक दृष्टिएँ तीन उत्थान मे बाँटि सकैत छी — [1] 1935 सँ 1950 धरि (2) 1950 सँ 1960 धरि एवं (3) 1960 सँ आइ धरि। एहि उत्थानक गति क्रमिक अधिकाधिक तीव्र होइत गेलैक छै।

तहिना डॉ. जयधारी सिंह साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित मैथिली कथा संग्रह मे कथा साहित्यक विकासक परम्परा पर विस्तार सँ चर्चा कएल अछि। ओ कहैत छथि "अनेक इतिहासकार मैथिली कथाकेँ तीनि नामधारि युग मे रखैत छथि —

(1) प्राचीन युग — 1930 ई० सँ पूर्वक युग जाहिमे ~~कथा साहित्यक~~ लोककथाक अतिरिक्त केवल संस्कृत कथा वा उपाख्यान ओ आख्यायिकाक अनुवाद होइत रहल, अधिक सँ अधिक एतबे भेल

जे आकार कथावस्तु कें दोसर परिधानमे राखल जाए तकर चेष्टा होइत रहल।

(2) मध्य युग — 1930क समकालीन वा किञ्चित पूर्व जाहिमे श्यामानन्द झा डॉ० किरण जी, वल्लभ झा प्रभृति किछु व्यक्ति सभ वोध हीन अथवा बालोपयोगी वा मनोरंजक कथा सभ लिखल।

(3) आधुनिक युग — (क) 1930सँ 1937ई० पर्यन्त जाहिमे सरोज जी, वैद्यनाथ मिश्र 'विद्यासिन्धु' पर्यन्त गनल जा सकैत छथि। (ख) 1935 ई०क पश्चात जाहिमे वस्तुतः कथाक लक्षणक वर्णन दऽ कएल आ अर्थात् विकसित लघुकथा लिखल जाए लागल।

एहि अत्याधुनिक कथाक युगकें पुनः तीन अवधि मे बाँटल जा सकैत अछि। 1935 सँ 1950 धरि, जाहिमे कुमार गंगानन्द सिंह, श्री हरिमोहन बाबू, किरण जी, सुमन जी, तन्त्रनाथ बाबू आदिक नाम अबैत अछि। 1950सँ 1960ई धरि जाहि व्यासजी, मनमोहन झा, मोतापद्म, गोविन्द झा कल्याणीशरण आदिक कथा प्रकाशमे आयल। 1960 सँ अद्यतन, शताधिक कथाकार लोकनि मैथिली कथा साहित्यक विकासमे लागल छथि।

क्रमशः

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक